आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-32, अंक-2 फरवरी, 2018

इस अंक में

- कार्यस्थल पर तनाव : मानसिक स्वास्थ्य का एक उपेक्षित पहलू 9
- गोवा में आयोजित 'डेस्टिनेशन गोवा 2018' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 12
- भोपाल में आयोजित 'विज्ञान मेला' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 14
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 15
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 16

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **श्रीमती प्रीति सूदन**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ संजय एम. मेहेन्दले**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

कार्यस्थल पर तनाव : मानसिक स्वास्थ्य का एक उपेक्षित पहलू

किसी देश की प्रगति उसके सरकारी, गैर–सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्रों में कार्यरत कर्मियों के कर्तव्यनिष्ठ योगदानों पर निर्भर करती है। ठीक इसी तरह किसी संगठन की प्रगति में उनके कर्मियों के कार्यस्थल से जुड़े विविध पहलुओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रस्तुत आलेख में कार्यस्थल पर उत्पन्न तनाव के अंतर्गत कर्मियों के मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति और उससे पड़ने वाले प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

क्या है कार्यस्थल पर तनाव ?

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कार्यस्थल पर तनाव को इस तरह पारिभाषित किया गया है कि किसी संगठन में कार्यरत लोगों द्वारा प्रस्तुत परिणाम उनकी योग्यता और क्षमता के अनुरूप नहीं हो, और वह उनकी क्षमता के लिए एक चुनौती खड़ी करता हो। इसके पीछे कार्य की रूपरेखा और कार्यप्रणाली दोषपूर्ण होने, असंतोषजनक प्रबंधन, एवं कार्यस्थल की स्थितियां असंतोषजनक होने, तथा सहकर्मियों एवं अधिकारियों से सहायता नहीं मिलने जैसी स्थितियों का हाथ होता है। हालांकि, कार्यस्थल पर तनाव, अथवा मानसिक बीमारी से पीड़ित कर्मियों के प्रति लोगों के व्यवहार जैसे पहलुओं पर शोध किए गए और इन समस्याओं को दूर करने के लिए इंटरवेंशन कार्यक्रम विकसित किए गए हैं, परन्तु अभी भी भारत सहित विभिन्न देशों और उद्योगों में यह पहलू उपेक्षित बना हुआ है। और केवल कुछ ही सुझाव वास्तविक रूप से कार्यान्वित किए गए हैं।

विगत कई दशकों से कार्यस्थल पर कर्मियों के मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का पालन किया जा रहा है, और इनमें मानवाधिकार की वैश्विक घोषणा की धारा 23, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिज्ञा–पत्र की धारा 6 और 7 तथा अशक्त व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सभा की धारा 27 जैसी धाराएं महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, इन नीतियों का अनुपालन घटता–बढ़ता रहा, जो बहुधा वांछित स्तर से कम ही था। इसके अतिरिक्त, निम्न और मध्यम आय वर्ग के देशों में कर्मी वर्ग की आबादी बहुत अधिक है जहां उपयुक्त इंटरवेंशन कार्यक्रमों का संचालन बहुत ही कम हो पाता है, और साथ–साथ मानसिक विकारों की उपस्थिति वाले कर्मियों के विरुद्ध भेदभाव रोकने की पर्याप्त नीतियां नहीं है।

भारत सहित 35 देशों की आबादी में सम्पन्न अध्ययनों से पता चला है कि अवसाद से पीड़ित लगभग दो–तिहाई कर्मचारियों के साथ कार्य–स्थल पर अथवा

नई नौकरी के लिए आवेदन देने के दौरान भेद–भाव का व्यवहार किया गया। इस अध्ययन से यह भी पता चला कि इस तरह का भेद–भाव निम्न आय–वर्ग के देशों की तुलना में उच्च आय वर्ग के देशों में अधिक था। भेद–भाव की स्थितियों में कर्मचारीगण कार्यस्थल पर बिना किसी लक्षण के पीड़ित रहते हैं और वे अपनी उपयुक्त देख–भाल नहीं करते। मानसिक विकार के लिए चिकित्सक की परामर्श लेना एक लांछन के रूप में माना जाता है। इसके परिणामस्वरूप मानसिक विकार से पीड़ित व्यक्तियों और ऐसी स्थिति में वास्तविक चिकित्सीय सुविधाएं प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के बीच अन्तर काफी अधिक बढ़ जाता है। यदि संगठनों को इसके प्रति जागरूक बनाया जाए और मानसिक विकार से पीड़ित व्यक्ति को चिकित्सीय सुविधा अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए तो इससे न केवल मानसिक विकार से पीड़ित व्यक्तियों को बेहतर सुरक्षा मिल सकेगी बल्कि ऐसे व्यक्ति अपनी स्थिति के विषय में अपने सहकर्मियों से चर्चा भी कर सकेंगे और चिकित्सीय सुविधा को शीघ्र अपना सकेंगे तथा उन्हें गंभीर मानसिक विकारों की चपेट में आने से बचाया भी जा सकेगा।

तनाव से जुड़ी अन्य स्थितियां

तनाव की स्थिति में अवसाद अथवा चिन्ता की स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। इनके अलावा, अतिरक्तदाब यानि हाइपरटेंशन और मधुमेह की स्थितियां विकसित होने का भी खतरा हो जाता है। जहां शोध कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप तनाव और इन शारीरिक विकारों के बीच एक दोहरी कड़ी स्थापित हुई है, वहीं संगठनों को इसे कार्यान्वित करने और एक उत्तम कार्य स्थल बनाए रखने के लिए अपने कर्मियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। यह स्वयं में एक कठिन कार्य हो सकता है, क्योंकि कार्य निर्धारित अवधि में पूरा करना होता है, और कर्मी अपनी वृद्धि एवं व्यक्तिगत जरूरतें पूरी करने के लिए अधिक कमाने हेतु निर्धारित अवधि से अधिक अवधि तक कार्य करता है। इसलिए, संगठनों को औद्योगिक क्षेत्र में उत्तम व्यवस्था उपलब्ध कराने के आधार पर कार्य अवधि के विषय में दिशा–निर्देश तैयार करने की आवश्यकता है जिनका नियमित रूप से अनुपालन होना चाहिए।

कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न

कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न के मामले भी तनाव के लिए जिम्मेदार होते हैं। ये स्थितियां कई संगठनों/प्रतिष्ठनों में देखी जा सकती हैं। कार्यस्थल में महिला और पुरुष दोनों ही इनसे प्रभावित हो सकते हैं, परन्तु बहुधा महिलाएं और निम्न पदानुक्रम के कर्मी इनका अधिक शिकार बनते हैं। संगठनों को इसका संज्ञान लेना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक कर्मी के लिए कार्यस्थल भयरहित और सुरक्षित हो। भारत में कार्यस्थल में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट वैधानिक कार्यवाहियों की व्यवस्था है और महिलाओं के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए विशिष्ट कानून हैं। कड़े दिशानिर्देशों और कार्यवाहियों का समर्थन किया जाता है। ऐसे मामलों पर निर्णय लेने के लिए प्रत्येक संगठन को समितियां गठित करनी चाहिए।

कार्यस्थल से संबद्ध खतरे वाले कारक

यद्यपि, वर्तमान में सम्पन्न शोध कार्य कार्यस्थल से जुड़े मानसिक विकारों के लक्षणों एवं उनसे जुड़े खतरे वाले कारकों पर केन्द्रित हैं, परन्तु यह पता लगाने पर बहुत कम ज़ोर दिया गया है कि किस प्रकार मानसिक विकार व्यक्ति के द्वारा किए गए कार्य और उसकी अनुपस्थिति को प्रभावित करता है और इस दिशा में किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप किस प्रकार व्यक्ति के कार्य निष्पादन और उसकी अनुपस्थिति में सुधार आता है। इस प्रकार समुदाय के एक बड़े वर्ग में मानसिक विकारों के प्रति किए जा रहे प्रयासों पर होने वाले व्यय और मानसिक विकार के कारण उत्पादकता में होने वाली क्षति को प्रामाणिक करने हेतु अधिक शोध कार्य करने की आवश्यकता हैं। यह सभी देशों के लिए प्रासंगिक है और उस स्थिति में यह विशिष्ट रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, जब रोजगार के प्रत्येक क्षेत्र अधिक प्रतिस्पर्धा करते हुए अपनी उत्पादकता बढ़ाना चाहते हैं, जबकि उसी समय अपनी लागत न्यूनतम रखना चाहते हैं। निम्न और मध्यम आय वर्ग के देशों में इनकी भी आवश्यकताएं हैं: (i) कार्यस्थल से संबद्ध मानसिक विकारों की व्यापकता और रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों से संबद्ध खतरे वाले कारकों को ज्ञात करने के लिए मौलिक जानपदिक रोगविज्ञानी अध्ययन करना; (ii) यह ज्ञात करना कि विभिन्न क्षेत्रों द्वारा इन स्थितियों का प्रबंधन करने के लिए क्या प्रणालियां अपनाई जा रही हैं; (iii) यह ज्ञात करना कि मौजूदा कानूनों का कितना अनुपालन और क्रियान्वयन किया जा रहा है, और स्थिति को बेहतर बनाने के लिए संगठन ढांचे में किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान प्रमाण से संकेत मिलता है कि इस संबंध में कोई एक कार्यवाही पर्याप्त नहीं होगी और सिफारिश की जाती है कि इससे निपटने के लिए संगठन/प्रतिष्ठान के स्तर पर कई प्रयासों का एक पैकेज होना चाहिए, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें अपनाया जा सके। कुछ प्रयास अत्यन्त उपयोगी पाए गए हैं, जैसे कि कर्मियों की संख्या नियंत्रित की जाए, शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए, तनाव के प्रबंधन के लिए जागरूकता बढ़ाई जाए। इसके विपरीत, मानसिक आघात की स्थिति में परामर्श सेवा प्रभावी नहीं पाई गई और मानसिक आघात से प्रभावित होने की स्थिति में मनोविकारी प्राथमिक उपचार और प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा औपचारिक मनोविज्ञानी सहायता प्रदान की जानी चाहिए। मानसिक विकारों के लिए कार्यस्थल की जांच और उसके पश्चात प्राथमिक मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावी पाई गई हैं, परन्तु उसी समय यदि किसी की पहचान गलती से मानसिक रोगी के रूप में की गई है तो उसकी चिन्ता काफी अधिक बढ़ जाती है। इसलिए कार्यस्थल पर नियमित जांच की सिफारिश नहीं की जाती।

कार्यस्थल की संस्कृति को बेहतर बनाने और तनाव को कम करने के लिए दिशानिर्देश

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कार्यस्थल पर तनाव से संबद्ध प्रमुख कारकों का वर्णन किया है और उनसे मुक्ति पाने के लिए दिशानिर्देशों का समर्थन किया है। कुछ कारक कार्यस्थल पर तनाव को बढ़ा देते हैं जिनमें सम्मिलित हैं: कार्यस्थल पर कर्मियों की भागीदारी और कार्यों पर नियंत्रण में कमी, कार्य नीरस और अरुचिकर होना, कर्मी की भूमिका का अस्पष्ट और विवादपूर्ण होना, कार्य सम्पन्न होने पर श्रेय नहीं देना, असमानता, पारस्परिक एवं व्यक्तिगत संबंध संतोषजनक नहीं होना, असंतोषजनक कार्य परिवेश, नेतृत्व और संचार संतोषजनक नहीं होना तथा घर एवं कार्य संबंधी जरूरतों में विरोधाभास। इस दस्तावेज में, स्थिति को बेहतर बनाने के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं और चार ऐसे उपायों को सूचीबद्ध किया है जो न केवल संगठनों के लिए बल्कि ट्रेड यूनियन, कर्मचारियों, सरकार और नियोक्ताओं के लिए भी प्रासंगिक हैं।

उपाय 1: मानसिक स्वास्थ्य के पहलुओं का विश्लेषण करना – प्रथम उपाय के रूप में न केवल कार्यस्थल से संबद्ध तनाव की व्यापकता/घटना और खतरे वाले कारकों पर स्पष्ट जानकारी रखना अनिवार्य है बल्कि, इन स्थितियों से संगठन की उत्पादकता में क्षति के कारण आय में होने वाली कमी के विषय में भी स्पष्ट जानकारी होना अनिवार्य है। यह कार्य व्यक्तिगत संगठनों द्वारा विशिष्ट क्षेत्रों अथवा अन्य क्षेत्रों में रोजगार क्षेत्र के विशिष्ट स्तरों पर किया जा सकता है। इसके लिए सर्वेक्षणों के माध्यम से आंकड़े एकत्र करने अथवा मानव संसाधनों अथवा स्वास्थ्य रिकॉर्ड्स में दर्ज आंकड़ों को मिलाकर अध्ययन करने की आवश्यकता है।

उपाय 2: नीति तैयार करना – प्रथम उपाय के माध्यम से प्राप्त जानकारी के आधार पर एक नीति विकसित की जा सकती है। इस प्रकार की नीति का मुख्य उद्देश्य सभी स्टेकहोल्डर्स (पणधारियों) की समस्याओं को दूर करना चाहिए और वह संगठनों की दूरदर्शिता एवं उनके उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए। इसके लिए विभिन्न स्टेकहोल्डर्स के साथ कई बैठकें की जानी चाहिए जिससे कि प्रमुख घटकों की पहचान की जा सके जो समस्याओं को दूर करने के लिए आवश्यक हों। यह प्रक्रिया नीति विकसित होने और नीति कार्यान्वित होने के दौरान नियमित जारी रखनी चाहिए।

उपाय 3: नीति कार्यान्वयन हेतु नीतियां विकसित करना– ऐसी नीतियों के कार्यान्वित होने के दौरान आवश्यक प्रक्रियाओं, लक्ष्यों और नीतियों के कार्यान्वित होने के लिए आवश्यक समयावधि की पहचान करने में सावधानी बरती जानी चाहिए। अंततः इन नीतियों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक प्रशिक्षण अथवा अतिरिक्त धनराशि की आवश्यकता पड़े तो उसकी व्यवस्था की जानी चाहिए।

उपाय 4: नीति का कार्यान्वयन और मूल्यांकन – किसी भी नीति के कार्यान्वयन के लिए सभी स्टेकहोल्डर्स के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी। कुछ नीतियों के लिए, कुछ लघु प्रदर्शन परियोजनाओं की आवश्यकता पड़ सकती है। प्राप्त परिणामों के आधार पर नीतियों में सुधार करके उसे बड़े फोरम के रूप में बढ़ाई जानी चाहिए। किसी नीति के कार्यान्वयन से पहले औपचारिक बैठकों अथवा संगठनों के प्रसार नेटवर्क के माध्यम से जानकारी का व्यापक प्रचार किया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, सरकारी स्तर की प्रमुख नीतियों, जिनका बड़ी संख्या में कर्मियों अथवा नियोक्ताओं पर प्रभाव पड़ता है, के लिए एक शुरुआती बैठक आयोजित की जानी चाहिए, परन्तु जब नीतियां केवल सीमित कर्मियों सहित संगठन को प्रभावित करें तो उनका ई–मेल के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए। कई नीतियों में एक प्रमुख कमी यह है कि उनका औपचारिक मूल्यांकन नहीं किया जाता। इसे प्रणाली में सम्मिलित किया जाना चाहिए और इसके लिए शुरुआत से ही उपयुक्त धनराशि उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इन नीतियों पर निगरानी रखने और उनका मूल्यांकन करने के लिए नीतियों की शुरुआत से ही विशिष्ट दिशानिर्देश होने चाहिए और निर्धारित समयावधि में उनका संचालन किया जाना चाहिए।

सरकार की भूमिका

कार्यस्थल पर तनाव की समस्या दूर करने के लिए नीतियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने में सरकार की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सरकार द्वारा कार्यस्थल पर न केवल महिलाओं, बच्चों, दिव्यांगजनों जैसे अतिसंवेदनशील व्यक्तियों की पहचान की जानी चाहिए बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रत्येक क्षेत्र में अतिसंवेदनशील आबादी सहित सभी कर्मियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त सावधानियां बरती जाए। सरकार को यह भी चाहिए कि विभिन्न क्षेत्रों के कार्यस्थल में तनाव के संदर्भ में निगरानी रखी जाए तथा शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक तनाव के उच्चतम स्तरों वाले क्षेत्रों जैसे कि खदान, कारखानों, स्वास्थ्य क्षेत्र, एवं अन्य क्षेत्रों के कार्यस्थल में इन समस्याओं को दूर करने के लिए अतिरिक्त नीतियां होनी चाहिए। कानून का पालन करने के लिए वैधानिक प्रक्रियाएं होनी चाहिए, उनका संचालन किया जाए और जो संगठन मौजूदा कानूनों का उल्लंघन करें उन्हें दण्डित किया जाए। वैधानिक प्रणाली के विषय में जानकारी कर्मियों और नियोक्ताओं दोनों को होनी चाहिए। उद्देश्य यह होना चाहिए कि तनाव, मानसिक विकार के संदर्भ में कार्यस्थल न्यायसंगत और भेद–भाव रहित हो।

निष्कर्ष

कार्यस्थल में तनाव और उससे संबद्ध मानसिक विकार की स्थिति से कर्मचारी/कर्मी और नियोक्ता दोनों दिन–प्रतिदिन प्रभावित रहते हैं। हालांकि, दोनों ही पक्ष इन समस्याओं से न तो भली–भांति जागरूक होते हैं और न ही उन्हें इनके विषय में पूरी जानकारी होती है। हालांकि, अधिकांश देशों में यह सुनिश्चित करने के लिए कानून हैं कि कार्यस्थल पर तनाव से जुड़े मानसिक विकारों से पीड़ित व्यक्तियों के अधिकार सुरक्षित हों, परन्तु बहुधा उनका प्रभावी ढंग से अनुपालन नहीं किया जाता। इसके परिणामस्वरूप पीड़ित व्यक्ति अपनी समस्याओं को साझा नहीं कर पाता और वह

लक्षणहीन स्थिति में पीड़ित रहता है। इसके परिणामस्वरूप उस व्यक्ति में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी अशक्तता की स्थिति बढ़ जाती हैं जिससे उत्पादकता प्रभावित हो जाती है। आज विश्व भर में कार्यस्थल में तनाव को चिन्ता का एक विषय माना जा रहा है, सभी स्टेकहोल्डर्स को इसके महत्व पर अतिरिक्त ध्यान देना चाहिए और यह देखना चाहिए कि इस स्थिति को बेहतर बनाने के लिए क्या किया जाए और कार्यस्थल को सभी के लिए सुरक्षित एवं स्वास्थ्यवर्धक स्थान बनाया जाए।

यह आलेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित ***'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च*** (आई जे एम आर)' के अक्टूबर, 2017 अंक में *''वर्कप्लेस स्ट्रेसः अ नेगलेक्टेड आस्पेक्ट ऑफ मेंटल हेल्थ वेल वींग''* शीर्षक से प्रकाशित लेख पर आधारित है।

गोवा में आयोजित 'डेस्टीनेशन गोवा 2018' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 2–4 फरवरी, 2018 के दौरान गोवा में आयोजित 'डेस्टीनेशन गोवा 2018' प्रदर्शनी में भाग लिया। दक्षिण गोवा के माननीय सांसद (लोकसभा) श्री नरेन्द्र केशव सवाइकर और माननीय सांसद (राज्य सभा) श्री विनय तेंदूलकर ने दिनांक 2 फरवरी, 2018 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में पोस्टर्स, वीडियो फिल्मों, मलेरिया रोगवाहक संबंधी लाइव प्रदर्शन एवं पैम्फलेट्स के माध्यम से भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों

केंद्रीय आयुष मंत्री श्री श्रीपद नाइक आई सी एम आर पैवीलियम में

माननीय सांसद श्री नरेंद्र केशव सवाइकर आई सी एम आर पैवीलियन में

दक्षिण गोवा के माननीय सांसद (लोक सभा) श्री नरेंद्र केशव सवाइकर मलेरिया परजीवी का अवलोकन करते हुए

गोवा के टाउन ऐण्ड कंट्री प्लानिंग मंत्री श्री विजय सरदेशाई आई सी एम आर पैवीलियम में

के विषय में जानकारी प्रदान की गई। आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की गोवा स्थित फील्ड यूनिट ने मलेरिया रोगवाहक मच्छरों के डिंभकों, डिंभकभक्षी, मछलियों माइक्रोस्कोप की सहायता से मलेरिया की विभिन्न अवस्थाओं, मच्छरों के प्रजनन के लिए जिम्मेदार विभिन्न स्थलों, बर्तनों, आदि में एकत्रित जल, कीटनाशी संसिक्त मच्छरदानी का लाइव प्रदर्शन किया।

दिनांक 3 फरवरी, 2018 को माननीय केन्द्रीय आयुष मंत्री श्री श्रीपद नाइक भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पैवीलियन में पधारे जहां वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग की प्रमुख डॉ नीरज टण्डन ने उन्हें आई सी एम आर की जारी शोध गतिविधियों और उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की गोवा स्थित फील्ड यूनिट के वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रभारी–निदेशक डॉ अश्विनी कुमार और उनकी यूनिट के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने विभिन्न लाइव

विद्यार्थीगण

मॉडेल्स, द्वारा मलेरिया रोगवाहक मच्छरों के डिंभकों, डिंभकभक्षी मछलियों, माइक्रोस्कोप के माध्यम से मलेरिया की विभिन्न अवस्थाओं पर जानकारी प्रदान की। दिनांक 4 फरवरी, 2018 को गोवा सरकार के टाउन ऐण्ड कंट्री प्लानिंग मंत्री श्री विजय सरदेशाई आई सी एम आर पैवीलियन में पधारे जहां डॉ टण्डन ने उन्हें विभिन्न गतिविधियों और उपलब्धियों से अवगत कराया। इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में विद्यार्थीगण एवं जनसाधारण पधारे। आई सी एम आर पैवीलियन को द्वितीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। प्रदर्शनी के समापन समारोह में डॉ टण्डन ने पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिन्ह और प्रमाण–पत्र प्राप्त किए।

विद्यार्थीगण आई सी एम आर पैवीलियम में

केंद्रीय आयुष मंत्री श्री श्रीपद नाइक से पुरस्कार प्राप्त करते हुए आई सी एम आर के वैज्ञानिक

भोपाल में आयोजित 'विज्ञान मेला' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 9–12 फरवरी, 2018 के दौरान भोपाल स्थित बी एच ई एल दसहरा मैदान में आयोजित 'विज्ञान मेला' में भाग लिया। दिनांक 9 फरवरी, 2018 को मध्य प्रदेश की महामहिम राज्यपाल माननीया

महामहिम राज्यपाल, मध्य प्रदेश श्रीमती आनंदी बेन पटेल उद्‌घाटन भाषण देते हुए

आई सी एम आर पैवीलियन में विद्यार्थीगण

आई सी एम आर मुख्यालय की वैज्ञानिक जी डॉ नीरज टण्डन और राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, भोपाल के निदेशक डॉ आर, एन तिवारी के साथ अन्य वैज्ञानिकगण

श्रीमती आनंदी बेन पटेल ने इस विज्ञान मेले का उद्‌घाटन करते हुए सभी वैज्ञानिक संस्थानों, एजेंसियों को स्वास्थ्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत में हुई प्रगति के विषय में विद्यार्थियों, जनसाधरण को जागरूकता प्रदान करने का आह्वान किया। विज्ञान भारती और मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा आयोजित इस विज्ञान मेले में राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं एन जी ओ स्तर के 100 से अधिक संस्थानों ने भाग लिया। आई सी एम आर मुख्यालय के अलावा आई सी एम आर के भोपाल स्थित राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान ने भाग लिया। पोस्टर के माध्यम से आई सी एम आर की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया तथा आई सी एम आर मुख्यालय की वैज्ञानिक 'जी' डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. एन. पाण्डेय और भोपाल स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ अनिल प्रकाश एवं अन्य वैज्ञानिकों ने आई सी एम आर पैवीलियन में बड़ी संख्या में पधारे छात्र–छात्राओं, एवं जन साधारण को आई सी एम आर की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी समूहों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

असंचारी रोग प्रभाग की तकनीकी सलाहकार समिति की बैठक	2 फरवरी, 2018
फेलोशिप पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	2 फरवरी, 2018
भारत में मौलिक, चिकित्सीय, ट्रांसलेशनल और कार्यान्वयन शोध इकोसिस्टम तैयार करने हेतु भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस ऐण्ड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर	2 फरवरी, 2018
सामाजिक व्यवहारात्मक एवं स्वास्थ्य प्रणाली अनुसंधान प्रभाग के परियोजना पुनरीक्षण समूह की बैठक	5 फरवरी, 2018
प्रजनन जैविकी, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य प्रभाग के विशेषज्ञ समूहों की बैठक	5 फरवरी, 2018
संभार तंत्र (लॉजिस्टिक्स) से संबद्ध विभिन्न पहलुओं पर फर्मों के साथ चर्चा करने के लिए विशेषज्ञ समिति की बैठक	5 फरवरी, 2018
''भारतीय चयापचयज और यकृत रोग (IMELD) अध्ययन'' पर टास्क फोर्स हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	6 फरवरी, 2018
इंडिया हाइपरटेंशन मैनेजमेंट इनीशिएटिव (IHMI) पर तकनीकी सलाहकार समूह की बैठक	7 फरवरी, 2018
अन्य माइक्रोबियल संक्रमणों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	8 फरवरी, 2018
चिकित्सीय परीक्षण में सामग्री हस्तांतरण पर बैठक	8 फरवरी, 2018
श्रवण दोष की व्यापकता और हेतुकी पर टास्क फोर्स परियोजना की बैठक	9 फरवरी, 2018
FGTB पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	9 फरवरी, 2018
वसा, नमक और चीनी की अधिकता युक्त खाद्यों के सेवन पर अध्ययन प्रोटोकॉल पर चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	12 फरवरी, 2018
मीडिया पॉलिसी पर आई सी एम आर की आन्तरिक समिति की प्रथम बैठक	12 फरवरी, 2018
आयोडीन अल्पता विकार पर आई सी एम आर टास्क फोर्स के विशेषज्ञ समूह की बैठक	13 फरवरी, 2018
इंडिया टी बी रिसर्च कंशोर्शियम पर अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सलाहकार समूह (ISAG) की तृतीय बैठक	19 फरवरी, 2018
पूर्वोत्तर क्षेत्र में कैंसर पर ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र की बैठक	20 फरवरी, 2018
फ्लोरोसिस पर आई सी एम आर टास्क फोर्स अध्ययन पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	20 फरवरी, 2018
पित्ताशय के कैंसर पर ब्रेन स्टॉर्मिंग सत्र	20 फरवरी, 2018

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

चेन्नई स्थित आई सी एस आर–राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ श्रीराम सेल्वाराजू ने ओकीनावा, जापान में ''संचारी रोग पर 5वें नीकी एशियन सम्मेलन'' में भाग लिया (2–3 फरवरी, 2018)।

पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ डी.टी. मौर्य ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में विश्व स्वास्थ्य संगठन के अंतर्गत रोगों की अनुसंधान एवं विकास ब्ल्यूप्रिंट प्राथमिकता सूची की 2018 की वार्षिक समीक्षा में भाग लिया (6–7 फरवरी, 2018)।

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'ई' डॉ मंजुला सिंह ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में सम्पन्न ''वैश्विक क्षयरोग अनुसंधान'' पर विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठक में भाग लिया (13–14 फरवरी, 2018)।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ बीना जोशी और वैज्ञानिक 'बी' डॉ सुचित्रा सुरे ने एंटेब सिटी, यूगांडा में सम्पन्न ''मातृ स्वास्थ्य एकेडमिक कंशोर्शियम लांच बैठक'' में भाग लिया (20–22 फरवरी, 2018)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर – राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान की वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक डॉ शान्ता दत्ता ने हात याई, थाईलैण्ड में सम्पन्न ''हैजा तथा अन्य जीवाणुज आंत्रीय संक्रमणों पर 52वें यू एस – जापान संयुक्त पैनेल सम्मेलन में भाग लिया (20–24 फरवरी, 2018)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' द्वय डॉ सुमन कानूनगो और डॉ आशीष मुखोपाध्याय ने एमोरी विश्वविद्यालय, अटलांटा, जॉर्जिया, सं. रा. अ. में सम्पन्न ''सैनी पाथ – टाइफॉयड अध्ययन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड की बैठक में भाग लिया (28 फरवरी, से 2 मार्च, 2018)।

चेन्नई स्थित राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ पी. कन्नन ने येरुसलम, इजराइल में ''जन्तुओं और मानवों में मुखीय बी सी जी के प्रयोग'' विषय पर समन्न अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया (28 फरवरी, से 5 मार्च, 2018)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

वयोवृद्धि : एक जैविक सत्यता पर सम्मेलन	8–10 फरवरी, 2018 कालीकट	डॉ शेजिला सी एच मिम्स कॉलेज ऑफ नर्सिंग पुथुकोड (मलाप्पुरम) केरल
जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान में आण्विक प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICMABR-18)	9–10 फरवरी, 2018 पुथनमपट्टी	डॉ के. श्रवणन नेहरू मेमोरियल कॉलेज पुथनमपट्टी (तिरुचिरापल्ली) तमिल नाडु
विज्ञान के लिए महिलाएं : महिलाओं के लिए विज्ञान पर सम्मेलन	9,22,23 फरवरी एवं 8 मार्च, 2018 नई दिल्ली	श्री नरेन्द्र शर्मा विज्ञान भारती नई दिल्ली
प्रायोगिक बाल अंतःस्रावीविज्ञान कार्यशाला (VII-PPE)	18 फरवरी, 2018 भोपाल	डॉ महेश महेश्वरी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान भोपाल
मेडिकल एवं हेल्थ साइंसेज़ फैकल्टी के लिए बायोएथिक्स 31 पाठ्यक्रम	22–24 फरवरी, 2018 कोल्हापुर	डॉ श्रीमती अनिता आर. गुणे डी वाई. पाटिल एजूकेशन सोसाइटी कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
स्वास्थ्य और रोग में नैनोमेडिसिन में उभरती दिशाओं पर राष्ट्रीय सम्मेलन	23–24 फरवरी, 2018 हमीरपुर (हि.प्र.)	डॉ देबजीत भौमिक हिमाचल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजूकेशन ऐण्ड रिसर्च (HIPER), हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)
उन्नत सूक्ष्मजीवविज्ञान शिक्षा और शिक्षण में अंतर्राष्ट्रीय आउटरीच गतिविधियों के साथ समन्वयन में उन्नत बायोएनालिटिकल विधियों और अनुप्रयोगों पर कार्यशाला	25 फरवरी–1 मार्च, 2018 कलींपोंग	प्रो. जयश्री दास शर्मा भारतीय विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान कोलकाता
10वां राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन 2018	28 फरवरी–1 मार्च, 2018 कोलकाता	प्रो (डॉ) दुलाल चन्द्र मुखर्जी विश्व विज्ञान कांग्रेस कोलकाता
हृद्वाहिकीय प्रणाली की गणितीय मॉडेलिंग और न्युमेरिकल सिमुलेशन पर कार्यशाला	1–2 मार्च, 2018 पोलाची	श्रीमती के. सरिता पी. ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)
IAC-KC CON 2018 इंडियन एकेडमी ऑफ साइटोजेनेटिक्स कर्नाटक चैप्टर वार्षिक सम्मेलन 2018	2–3 मार्च, 2018 कोलार	डॉ मंजुला के. श्री देवराज उर्स मेडिकल कॉलेज तामका, कोलार (कर्नाटक)

स्टेम सेल जैविकी में आण्विक इमेजिंग पर कार्यशाला	6–8 मार्च, 2018 बेंगलुरू	डॉ इन्द्राणी दत्ता राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान (NIMHANS), बेंगलुरू
प्वाइंट ऑफ केयर परीक्षण का प्रयोग करते हुए *इन वीट्रो* डायग्नॉस्टिक्स (IVD) : नवाचार और चुनौतियां	7–8 मार्च, 2018 डिंडीगुल	डॉ वी. ई. जायन्ती PSNA कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी डिंडीगुल (तमिल नाडु)
विकिरण और रोगी सुरक्षा के चिकित्सीय प्रयोगों पर सम्मेलन	7–8 मार्च, 2018 चेन्नई	सुश्री हेम लता आर. जे. वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस टेक्नोलॉजी ऐण्ड एडवांस्ड स्टडीज चेन्नई
शल्यक्रिया में प्रयुक्त बायोमेडिकल यंत्रों में नवीन प्रगति और माइलस्टोंस पर सेमिनार	8–9 मार्च, 2018 तिरुचेंगोड	डॉ आर. श्रवण कुमार विवेकानन्द कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर वीमेन, इलयमपलयम, तिरुचेंगोड (नमक्कल)
ग्रामीण और जनजातीय युवावय लड़कियों में मासिक स्वास्थ्य और हाइजीन प्रबंधन पर जागरूकता उत्पन्न करने पर कार्यशाला	8–9 मार्च, 2018 पोलाची	डॉ जे. निर्मल देवी भरतियार यूनिवर्सिटी आर्ट्स ऐण्ड साइंस कॉलेज पोलाची (तमिल नाडु)
एसेंसन–स्टेप एबोब पर सम्मेलन (2018)	9–10 मार्च, 2018 मुम्बई	डॉ (श्रीमती) पद्मजा मवानी सामन्त सेठ जी. एस. मेडिकल कॉलेज एवं के ई एम अस्पताल मुम्बई
स्वास्थ्य सुरक्षा में डाटा माइनिंग के अनुप्रयोगों पर राष्ट्रीय सेमिनार	9–10 मार्च, 2018 तिरुपति	डॉ एस. मुरली कृष्णा श्री वेंकटेश्वरा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (SVCE) तिरुपति (चित्तूर) आन्ध्र प्रदेश
नैनोपार्टीकुलेट औषध वितरण प्रणालियां : बेंच से बेडसाइड तक पर राष्ट्रीय सम्मेलन	9–10 मार्च, 2018 सूरत	डॉ प्रणब जे. शाह मालिबा फार्मेसी कॉलेज सूरत (गुजरात)
क्वालिटी बाई डिज़ाइन पर राष्ट्रीय सेमिनार	9–10 मार्च, 2018 बेंगलूरू	डॉ ए. आर. श्रीविद्या आदित्य बैंगलोर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी एजूकेशन ऐण्ड रिसर्च बेंगलूरू
प्रमाण आधारित चिकित्साविज्ञान एवं चिकित्सीय अनुसंधान सम्मेलन – EBCCON 2018 वैज्ञानिक लेखन पर सम्मेलन पूर्व कार्यशाला	9–10 मार्च, 2018 कट्टनकुलाथुर	डॉ मेल्विन जॉर्ज SRM मेडिकल कॉलेज अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र कटनकुलाथुर कांचीपुरम (तमिल नाडु)
सामग्रियों के पुनः प्रयोग और रीसाइक्लिंग पर चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICRN-2018)	9–11 मार्च, 2018 कोट्टायम	डॉ हन्ना जे. मारिया IIUCNN महात्मा गांधी विश्वविद्यालय कोट्टायम (केरल)
डेंड्राइटिक कोशिका आधारित प्रतिरक्षाचिकित्सा : कैंसर के प्रति प्रतिरक्षा अनुक्रियाओं को बढ़ाने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	10 मार्च, 2018 सागर	डॉ आशीष कुमार जैन ADINA इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज़ सागर (मध्य प्रदेश)

IPNA शिक्षण पाठ्यक्रम – ऑफिस नेफ्रोलॉजी प्रैक्टिस : बालरोग चिकित्सकों और पारिवारिक चिकित्सकों के लिए अनिवार्य	10–11 मार्च, 2018 बैंगलोर	डॉ प्रिया पासीस सेंट जांस मेडिकल कॉलेज अस्पताल बैंगलोर
अन्तर्राष्ट्रीय इंफ्लुएंज़ा कार्यशाला	11 मार्च, 2018 भुवनेश्वर	डॉ प्रताप कुमार जेना कलिंग औद्योगिक प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
वर्तमान युग में इथनो फार्मास्युटिकल्स के गुणवत्ता नियंत्रण और मानकीकरण पर सेमिनार	12–13 मार्च, 2018 भुवनेश्वर	डॉ अमूल्यरत्न बेहरा स्कूल ऑफ फार्मेसी ऐण्ड लाइफ़ साइंसेज़ सेंचुरियन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी ऐण्ड मैनेजमेंट भुवनेश्वर
चिकित्सीय भेषजगुणविज्ञान पर 32वीं वार्षिक राष्ट्रीय कार्यशाला	12–17 मार्च, 2018 चण्डीगढ़	डॉ नुसरत सफ़ीक स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़
अस्पताल में भरती रोगियों में दवाइयों की प्रतिकूल प्रतिक्रिया के चिकित्सीय और आर्थिक प्रभाव पर सेमिनार	14 मार्च, 2018 नेल्लोर	डॉ बी – गुणासेकरन राव फार्मेसी कॉलेज नेल्लोर (आन्ध्र प्रदेश)
कैनर ओमिक्स में दिशाओं पर सेमिनार	14 मार्च, 2018 पुदुचेरी	डॉ पी. टी. वी. लक्ष्मी स्कूल ऑफ लाइफ़ साइंसेज़ पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय पुदुचेरी
एकीकृत जैविकी एवं व्यावहारिक आनुवंशिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICIBAG)	15–17 मार्च, 2018 हैदराबाद	डॉ स्मिता सी. पवार उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद
भूमण्डलीकरणशील विश्व में मेडिकल एंथ्रोपोलॉजी एवं जनजातीय स्वास्थ्य सुरक्षा प्रणालियों में प्रासंगिकता पर सेमिनार (REMATH)	16–18 मार्च, 2018 रायपुर	डॉ जीनेन्द्र कुमार प्रेमी पं. रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)
सुस्पष्ट चिकित्साविज्ञान : जींस, पर्यावरण और डाटा चैलेंज पर संगोष्ठी	19 मार्च, 2018 गुरुग्राम	डॉ अतुल कठैत ए पी जे सत्या विश्वविद्यालय गुरुग्राम (हरियाणा)
रोबोटिक चिकित्सा हेतु उन्नत मेडिकल यंत्रों पर सेमिनार	19 मार्च, 2018 थोप्पुर	श्री वी. अरुण जयलक्ष्मी प्रौद्यौगिकी संस्थान थोप्पुर (धर्मापुरी) तमिल नाडु
प्रयोगशाला जन्तु तकनीकें और एथिक्स पर कार्यशाला	19–23 मार्च, 2018 चेन्नई	डॉ आर. सेल्वाराज सेंटर फॉर लेबोरेटरी एनीमल टेक्नोलॉजी, सत्यभामा इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस ऐण्ड टेक्नोलॉजी चेन्नई

मानव ऊतकों और अंग प्रत्यारोपण के लिए जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में एडिटिव निर्माण के कार्यान्वयन पर सेमिनार	20 मार्च, 2018 करूर	डॉ पी. गोमती एन एस एन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी मनलमेडु करूर (तमिल नाडु)
बायोमेडिकल यंत्रों के लिए परम्परागत और आधुनिक प्रयासों पर सेमिनार	20 मार्च, 2018 तिरुचेंगोड	डॉ पी. कन्नन विवेकानन्द कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर वीमेन तिरुचेंगोड (नमक्कल) तमिल नाडु
अनुकुलतम स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु सम्पूर्ण जीवन भर समग्र स्वास्थ्य सुरक्षा के आयामों के प्रति चुनौतियों पर नर्सिंग सम्मेलन	21–22 मार्च, 2018 चेन्नई	डॉ वी. हेमावती श्री बालाजी नर्सिंग कॉलेज चेन्नई
मणिपुर के जनजातीय समुदायों में यकृतशोथ रोग पर कार्यशाला	22–23 मार्च, 2018 उखरुल (मणिपुर)	डॉ रिमाई जॉय अर्डेन्ट फाउण्डेशन DSIR-SIRO उखरुल (मणिपुर)
समग्र स्वास्थ्य और कल्याण पर राष्ट्रीय सम्मेलन	22–24 मार्च, 2018 नई दिल्ली	डॉ जुगल किशोर वर्धमान मेडिकल कॉलेज एवं सफदरजंग अस्पताल नई दिल्ली
स्वास्थ्य सुरक्षा में प्रयोगों हेतु FPGA आधारित मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक युक्तियों में शोध का सापेक्ष महत्व	23–24 मार्च, 2018 कोइम्बटूर	डॉ पी. श्रवणन PSG कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
एकीकृत स्वास्थ्य, मेडिसिन एवं सामाजीकरण प्रणाली पर सेमिनार	24–25 मार्च, 2018 पटना	डॉ कृष्णकान्त शर्मा मानव विकास एवं कल्याण संस्थान पटना
मातृ एवं नवजात स्वास्थ्य – शोध प्रमाण को व्यवहार में रूपान्तरित करने पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	26–27 मार्च, 2018 बेलगावी	डॉ एम. एस. गुणाचारी KLE एकेडमी ऑफ हायर एजूकेशन ऐण्ड रिसर्च बेलगावी (कर्नाटक)
मनोवैज्ञानिक ट्रामा, बाल सुरक्षा और मानसिक बीमारी : प्रशिक्षण, अनुसंधान और सेवा प्रावधानों में दिशाओं पर प्रथम राष्ट्रीय महासभा	27–28 मार्च, 2018 नई दिल्ली	डॉ सुजाता सत्पथी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
तंत्रिकाह्रासी रोगों हेतु नैनो आधारित चिकित्सा पर 10वीं NIPER (R) संगोष्ठी	27–28 मार्च, 2018 रायबरेली	डॉ एस. जे. एस. फ्लोरा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजूकेशन ऐण्ड रिसर्च (NIPER) रायबरेली (उत्तर प्रदेश)
मेडिकल वेस्ट प्रबंधन प्रणाली – नियंत्रण, निपटान और सुरक्षा उपाय पर सेमिनार	27–28 मार्च, 2018 थिंडल	डॉ ई. रवि वेललार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी थिंडल (इरोड) (तमिल नाडु)

उत्तर उड़ीसा में बच्चों की पोषणज स्थिति : समस्याओं और चुनौतियों पर सेमिनार	27–28 मार्च, 2018 बालासोर	सुश्री अनिता कार आंचलिक विकास परिषद बालासोर (ओडिशा)
नवीन औषधियों आनुवंशिक रूप से रूपातरित उत्पादों और हर्बल औषधियों के चिकित्सीय परीक्षणों और फार्मेकोविजिलेंस में चुनौतियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	28–29 मार्च, 2018 वकनाघाट (सोलन)	डॉ नीलाद्री शेखर घोष स्कूल ऑफ फार्मास्युटिक्स साइंसेज़ बहारा विश्वविद्यालय वाकनाघाट, सोलन (हिमाचल प्रदेश)
सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए नवाचारी स्मार्ट प्रौद्योगिकियों पर सम्मेलन	30 मार्च, 2018 मदुरई	डॉ के. कविता मदर टेरेसा महिला विश्वविद्यालय कोडाइकनाल
आवश्यक और आपातकालीन प्रसूति संबंधी सेवाओं को सुदृढ़ बनाने पर राष्ट्रीय सम्मेलन	30–31 मार्च, 2018 पुणे	श्रीमती सीता देवी सिम्बियोसिस कॉलेज ऑफ नर्सिंग पुणे

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के प्रकाशन

1.	**इंडियन फूड कम्पोज़ीशन टेबल्स (2017)** लेखकः टी. लोग्वाह, आर. अनन्तन, के. भास्करचारी एवं के. वेंकैया	350.00
2.	**लो कॉस्ट न्युट्रीशियस सप्लीमेंट्स** लेखक : सी. गोपालन बी.वी.रामशास्त्री, एस.सी.बालसुब्रमणियन, एम.सी.स्वामीनाथन (द्वितीय संस्करण 1975, पुनर्मुद्रण - 2005-2011)	15.00
3.	**मेन्यूस फॉर लो कॉस्ट बैलेन्स्ड डाइट्स ऐण्ड** स्कूल लंच प्रोग्रेम्स (सुटेबल फॉर नार्थ इंडिया) लेखक : एस.जी.श्रीकंटिया, सी.जी.पंडित (द्वितीय संस्करण 1977, पुनर्मुद्रण 2004)	10.00
4.	**मेन्यूस फॉर लो कॉस्ट बैलेन्स्ड डाइट्स ऐण्ड** स्कूल लंच प्रोग्रेम्स (सुटेबल फॉर साउथ इंडिया) लेखक : एम.मोहन राम, सी. गोपालन (चतुर्थ संस्करण 1996, पुनर्मुद्रण 2002)	8.00
5.	**सम कॉमन इंडियन रेसिपीज़ ऐण्ड देयर न्युट्रीटिव वैल्यू** लेखक : स्वर्ण पसरीचा एवं एल.एम.रिबेलो (चतुर्थ संस्करण 1977, पुनर्मुद्रण 2006, 2011)	50.00
6.	**न्युट्रीशन फॉर मदर ऐण्ड चाइल्ड** लेखक : पी.एस. वेंकटाचलम् तथा एल.एम.रिबेलो (पंचम संस्करण 2002, पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	35.00
7.	**सम थिरैप्यूटिक डाइट्स** लेखक : स्वर्ण पसरीचा (पंचम संस्करण 1996,पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	15.00

8.	**न्युट्रिएन्ट रिक्वायरमेण्ट्स ऐण्ड रिकमेंडेड डाइटरी अलाउंसेज़ फॉर इंडियंस** लेखक : बी.एस.नरसिंगा राव,बी. शिंवकुमार (प्रथम संस्करण 1990, पुनर्मुद्रण 2008)	100.00
9.	**फ्रूट्स** लेखक : इंदिरा गोपालन तथा एम.मोहन राम (द्वितीय संस्करण 1996, पुनर्मुद्रण-2004, 2011)	35.00
10.	**काउंट व्हाट यू ईट** लेखक : स्वर्ण पसरीचा (1989, पुनर्मुद्रण 2000)	40.00
11.	**डाइट ऐण्ड डायबिटीज़** लेखक : टी.सी.रघुराम, स्वर्ण पसरीचा तथा आर.डी.शर्मा (तृतीय संस्करण 2012)	50.00
12.	**डाइट ऐण्ड हार्ट डिसीज़** लेखक : गफूरुन्निसा तथा कमला कृष्णस्वामी (प्रथम संस्करण 1994, पुनर्मुद्रण 2004)	30.00
13.	**डाइटरी टिप्स फॉर दि एल्डरली** लेखक : स्वर्ण पसरीचा तथा बी.वी.एस.थिमायम्मा (प्रथम संस्करण 1992, पुनर्मुद्रण 2005, 2010)	15.00
14.	**डाइटरी गाइडलाइन्स फॉर इंडियंस-ए मैनुअल** लेखक : कमला कृष्णास्वामी, बी. सेसीकरण (द्विंतीय संस्करण 2011)	110.00
15.	**डाइटरी गाइडलाइन्स फॉर इंडियंस** लेखक : कमला कृष्णास्वामी, बी. सेसीकरण (प्रथम संस्करण 1998, पुनर्मुद्रण 1999, 2009)	15.00
16.	**ए मैनुअल ऑफ लेबोरेटरी टेकनीक्स** लेखक : एन. रघुरामुलु, के.माधवन नायर तथा एस.कल्याणसुन्दरम् (द्वितीय संस्करण, 2003)	110.00
17.	**फल** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'फ्रूट्स' का हिंन्दी रूपान्तरण अनुवाद : अंजू शर्मा एवं कृष्णानन्द पाण्डेय (प्रथम संस्करण 1997, पुनर्मुद्रण, 2001, 2012)	25.00
18.	**भारतीयों के लिए आहार संबंधी मार्गदर्शिका** (प्रथम संस्करण 1998, पुनर्मुद्रण 1999, 2001, 2012)	10.00
19.	**अपने आहार को जानें** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'काउंट हवाट यू ईट' का हिंन्दी रूपान्तरण अनुवाद : कृष्णानन्द पाण्डेय (प्रथम संस्करण 1997, पुनर्मुद्रण 2012	35.00

20	**क्लीनिकल मैनुअल फॉर इनबॉर्न एरर्स ऑफ मैटाबॉलिज्म (2008)** लेखक : वीना कालरा, मधूलिंका काबरा, सीमा कपूर	250.00
21.	**भारतीयों के लिए आहार संदर्शिका-एक नियमावली** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'डाइटरी गाइडलाइंस फॉर इंडियंस-अ मैनुअल' का हिंदी भाषा में रूपान्तरण अनुवाद - मनीष मोहन गोरे प्रथम संस्करण - 2014	110.00
22.	**आहार और हृदय रोग** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'डाइट ऐण्ड हार्ट डिज़ीज' का हिंदी भाषा में रूपान्तरण अनुवाद - डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय प्रथम संस्करण - 2015	35.00
23.	**डेगू एवं चिकनगुनिया – रोग प्रसार एवं रोकथाम (2015)** संपादक : प्रो. विनोद प्रकाश शर्मा	500.00
24.	**खाद्योभाश ओ मधुमेह** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'डाइट ऐण्ड डायबिटीज़' पुस्तक का बांग्ला भाषा में रूपान्तरण अनुवाद - श्रीमती श्रिंनवंती डे प्रथम संस्करण - 2015	50.00
25.	**भारतीयन का पैन आहार नियमावली - एक पुस्तिका** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'डाइटरी गाइडलाइंस फॉर इंडियंस-अ मैनुअल' का उड़िया भाषा में रूपान्तरण अनुवाद - श्रीमती बिलासिनी मोहन्ती प्रथम संस्करण - 2016	110.00
26.	**भारतीय खाद्‌य पदार्थों के पोशण मान** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित न्युट्रीटिव वैल्यू ऑफ इंडियन फूड्स का हिन्दी रूपान्तरण अनुवाद : मनीष मोहन गोरे प्रथम संस्करण–2016	75.00
27.	**एथिकल गाइडलाइन्स फॉर बायोमेडिकल रिसर्च ऑन ह्युमन पार्टीसिपैंट्स** लेखक : एन.के.गांगुली, गीता जोतवानी, रोली माथुर, एम.एस. वैलियाथन (2008)	250.00

औषधीय पादपों (मेडिसिनल प्लांट्स) पर पुस्तकें

मेडिसिनल प्लान्ट्स ऑफ इंडिया, खण्ड 2 (1987)				136.00
रिव्यूज़ ऑन इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स				
खण्ड	1	(2004)	(Abe-Alle)	620.00
खण्ड	2	(2004)	(Alli-Ard)	620.00
खण्ड	3	(2004)	(Are-Azi)	620.00
खण्ड	4	(2004)	(Ba-By)	620.00
खण्ड	5	(2007)	(Ca-Ce)	900.00
खण्ड	6	(2008)	(Ch-Ci)	900.00
खण्ड	7	(2008)	(Cl-Co)	1000.00
खण्ड	8	(2009)	(Cr-Cy)	1560.00
खण्ड	9	(2009)	(Da-Dy)	1000.00
खण्ड	10	(2011)	(Ec-Ex)	2190.00
खण्ड	11	(2013)	(Fa-Gy)	2372.00
खण्ड	12	(2013)	(Ha-Hy)	1878.00
खण्ड	13	(2013)	(Ib-Ky)	1380.00
खण्ड	14	(2015)	(La-Ly)	1450.00
खण्ड	15	(2016)	(Ma-Me)	1620.00

क्वालिटी स्टैण्ड्र्डस ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स

खण्ड	1	2003	600.00
खण्ड	2	2005	600.00
खण्ड	3	2005	890.00
खण्ड	4	2006	700.00
खण्ड	5	2008	500.00
खण्ड	6	2008	600.00
खण्ड	7	2008	600.00
खण्ड	8	2010	1600.00
खण्ड	9	2011	1792.00
खण्ड	10	2012	1860.00
खण्ड	11	2013	2140.00
खण्ड	12	2014	1912.00
खण्ड	13	2015	1730.00
खण्ड	14	2016	1580.00
खण्ड	15	2016	1620.00

औषधीय पादपों पर अन्य पुस्तकें

1.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डर्ड्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 1 (2010)	1574.00
2.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डड्र्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्र्स खण्ड 2 (2010)	1524.00
3.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डड्र्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 3 (2016)	1400.00
4.	फाइटोकेमिकल रेफरेंस स्टैण्डड्र्स ऑफ सेलेक्टेड इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स खण्ड 4 (2016)	1750.00
5.	पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स इन दि मैनेजमेंट ऑफ लीवर डिसऑर्डर्स (2008)	500.00
6.	पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन मेडिसिन प्लांट्स इन दि मैनेजमेंट ऑफ लिम्फैटिक फाइलेरियासिस (2012)	1920.00
7.	पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन मेडिसिनल प्लांट्स इन दि मैनेजमेंट ऑफ डायबिटीज़ मेलिटस (2014)	1700.00

औषधीय पादपों से संबंधित पुस्तकें 40 प्रतिशत छूट पर उपलब्ध हैं। डाक व्यय अतिरिक्त होगा।

अन्य

रेग्युलेटरी रिक्वायरमेंट्स फॉर ड्रग डेवलपमेंट ऐण्ड क्लीनिकल रिसर्च (2013)	700.00

नियतकालिक प्रकाशन (पीरियाडिकल)

दि इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर) (मासिक)

वार्षिक ग्राहकों के लिए मूल्य 4000/– रुपए, प्रति कॉपी : मूल्य 400/–रुपए

'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in, और www.ijmr.org.in पर भी उपलब्ध है

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।

दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं
प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

समाचार पत्रों के पंजीकरण नियम 1956 के नियम 8 के अन्तर्गत आई सी एम आर पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य मुद्दों से संबंधित विवरण

प्रकाशन	:	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	श्री जगदीश नारायण माथुर
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029
प्रकाशक का नाम	:	उपर्युक्त
राष्ट्रीयता	:	
पता	:	
सम्पादक का नाम	:	डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, अंसारी नगर, नई दिल्ली -110 029

मैं, जगदीश नारायण माथुर यह घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए तथ्य मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

ह. जे.एन. माथुर
प्रकाशक

'आई सी एम आर पत्रिका' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87